मुझे भी है एक सपना

"मधु... उठो, आज तुम्हारी नया स्कूल जाने की पहली दिन है, उठ कर जल्दी तैयार हो जाओ।" "ठीक है माँ, आज मैं नये नए स्कूल में जाकर अच्छे से पढ़ूँगी।" "हाँ, तो जल्दी तैयार हो जाओ।" "हाँ माँ," "हे भगवान स्कूल जाते ही मुझे अच्छे मित्र को देना।" मधु तैयार होने से पहले खिड़की खोल कर बाहर देखा, तो आसमान से हिम की मोतियाँ गिर रही थी। हिम की कारण ~~बाह~~ बाहर की सभी फूल ढका हुआ था। "अरे, ये कितना सुन्दर है।" "माँ, मैं जा रही हूँ हूँ।" "ठीक है, खुद की खयाल रखना।" "ठीक है माँ।"

मधु स्कूल के सामने पहुँच गया। "ये कितने बड़ा स्कूल है, मैं तो आज तक ऐसा स्कूल देखा ही नही है।" मधु स्कूल की सुन्दरता देख कर ऐसा चल रही थी। तब स्कूल की घंटी

भजने की आवाज़ सुन कर वह जल्दी उसकी कक्षा की तरफ भागती है। कक्षा में प्रवेश कर के वहाँ मिली एक काली कुर्सी में जाकर बैठा। उसे एक अच्छे दोस्त भी मिली। उसकी उस दिन खुशी से भरी हुई थी। स्कूल की वक्त अंत होते ही मधु और उसकी दोस्त कुमार वापस घर चला। कुमार मधु की एक अच्छे दोस्त ही बना।

अगले दिन मधु और कुमार स्कूल में जा रहे थे। तो कुमार उसका एक रिश्तेदार को देख कर उससे बात करने के लिए गया। वह वापस मधु के पास आया तो वहाँ मधु नहीं थी। है उसे लगा कि मधु स्कूल में गया होगा। कुमार जल्दी ही स्कूल में पहुँचने के लिए देर होने के वजह से भाग लिया। स्कूल में जाकर कक्षा के अंतर पहुँचा तो वहाँ मधु नहीं थी। कुमार को डर आने लगा। स्कूल की वक्त कतम

होते ही वह मधु को ढूँढने लगा। वह मधु की घर में जाकर देखा, लेकिन मधु वहाँ नहीं थी। 'क्या हुआ बेटा, मधु कहाँ है?' 'वो, मधु दिख नहीं रही है। आज वह स्कूल में भी नहीं आया, बस, वह मेरी पास ही था वह, लेकिन अचानक पता नहीं कहाँ गायब हो गया।' 'अरे कहाँ गया मेरी बच्ची, चलो हम साथ में मिलकर उसे ढूँढती है।'

मधु की माँ राधा और कुमार मिलकर उसे ढूँढने निकला। लेकिन कही भी नज़र नही आ रही थी। राधा मधु को ज़ोर से बुलाया, मधु... मधु... कहाँ हो तुम। लेकिन मधु नहीं मिली। कुमार ने कहा, सब मेरी गलती है, मुझे उसे अकेले छोडना नहीं चाहिए था। तब उन लोगों के सामने आकर एक गाड़ी रुका। और एक लड़की को उनके सामने फेका। कुमार और मधु की माँ की पूरे शरीर काँप रहे थे। कुमार उस लड़की को देखा। कुमार पूरी तरह काँप रहा था। वह जल्द ही वहाँ गिर पड़ा। माँ ने वह कौन है पूछा तो

कुमार काँपते हुए ~~कहा~~. ~~म~~ म.. म.. मधु...... कह कर चिल्लाया। माँ भी उस सड़क में खड़ी होकर चिल्लाया। मेरी अंधेरे घर की उजाला थी वह। मधु, क्या हुआ तुम्हे। ~~मधु ने~~ माँ... माँ... उन ~~लोग~~ लोग... बाकी कहने से पहले ही मधु बेहोश हो गया। राधा जल्दी मधु को अस्पताल ले गया। साथ कुमार भी था। कुमार बहुत डर गया था। उसे पता नही था कि क्या करु। राधा और कुमार के पूरे हाथ में खून था।

कुछ साल के बाद देखे तो मधु और कुमार फिर से साथ में खेल रही है। मधु ~~घर~~ उसकी कमरे में जाकर डायरी लिखती है कि मुझे भी था एक सपना। लेकिन उन लोगों ने मेरी सपना छीन लिया। मेरी सिर्फ एक ही सपना था वो है, मुझे पढ़कर एक अच्छी टीचर बनना। लेकिन मुझे नही पता. अब वो पूरा होगी या नही। ये लिख कर मधु उस टूटा हुआ फूल को देखते रहा। ~~लेकिन~~ तब से उन गाड़ी वालों का काम पूरा दुनियामें फैल चुका था। सीख: लड़कियों को आज़ादी से चलने दो उन्हे चोट मत पहुँचाओ।